http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

*कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका,* (2026) वर्ष 6, अंक 6, 52-54

Article ID:606

# एग्रीप्रेन्योरशिप: भारतीय युवाओं के लिए उभरता हुआ करियर विकल्प

**डॉ. किरण एन. पटेल[1], डॉ. स्वाति एस. शर्मा[2]**

[1]सहायक प्राध्यापक, ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

[2]प्रोफेसर, ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

***अनुरूपी लेखक**

**किरण एन. पटेल***

भारत सदियों से कृषि प्रधान देश रहा है। यहाँ की सभ्यता, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और ग्रामीण जीवन का आधार कृषि रही है। आज भी देश की एक बड़ी आबादी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि और उससे जुड़े व्यवसायों पर निर्भर है। यद्यपि भारत ने औद्योगिकीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी तथा सेवा क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी कृषि का महत्व आज भी कम नहीं हुआ है। बल्कि बदलती वैश्विक परिस्थितियों, बढ़ती जनसंख्या, गुणवत्तापूर्ण खाद्य पदार्थों की मांग, जलवायु परिवर्तन, डिजिटल क्रांति तथा आधुनिक तकनीकों के विकास ने कृषि क्षेत्र को नए अवसरों और नई चुनौतियों के साथ एक नए दौर में प्रवेश कराया है। आज कृषि केवल खाद्यान्न उत्पादन तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह एक व्यापक व्यवसायिक गतिविधि का रूप ले चुकी है, जिसमें उत्पादन, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, ब्रांडिंग, विपणन, निर्यात तथा कृषि सेवाओं जैसे अनेक आयाम शामिल हो गए हैं।

भारत विश्व के सबसे युवा देशों में से एक है। देश की लगभग 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। यह युवा शक्ति भारत की सबसे बड़ी पूंजी है। परंतु बढ़ती जनसंख्या, सीमित सरकारी नौकरियाँ तथा निजी क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण केवल पारंपरिक रोजगार के अवसर युवाओं की आकांक्षाओं को पूरा करने में पर्याप्त नहीं हैं। ऐसे समय में आवश्यकता है कि युवा रोजगार खोजने वाले नहीं, बल्कि रोजगार उपलब्ध कराने वाले बनें। इसी सोच ने उद्यमिता को बढ़ावा दिया है। जब उद्यमिता का यह दृष्टिकोण कृषि क्षेत्र के साथ जुड़ता है, तब "एग्रीप्रेन्योरशिप" की अवधारणा सामने आती है। वर्तमान समय में एग्रीप्रेन्योरशिप भारतीय युवाओं के लिए एक ऐसा करियर विकल्प बनकर उभर रही है, जो आर्थिक समृद्धि, सामाजिक विकास और राष्ट्रीय प्रगति—तीनों को एक साथ गति प्रदान कर सकता है।

## एग्रीप्रेन्योरशिप की अवधारणा

एग्रीप्रेन्योरशिप दो शब्दों—एग्रीकल्चर (Agriculture) और एंटरप्रेन्योरशिप (Entrepreneurship)—से मिलकर बना है। इसका अर्थ है कृषि एवं कृषि से संबंधित क्षेत्रों में नवीन विचारों, वैज्ञानिक तकनीकों, आधुनिक प्रबंधन तथा व्यवसायिक दृष्टिकोण के आधार पर लाभदायक उद्यम स्थापित करना। एक एग्रीप्रेन्योर केवल खेती करने वाला किसान नहीं होता, बल्कि वह कृषि क्षेत्र की समस्याओं को अवसरों में बदलने वाला नवाचारी उद्यमी होता है। वह बाजार की मांग को समझता है, नई तकनीकों को अपनाता है, उत्पादों में मूल्य संवर्धन करता है तथा उपभोक्ताओं तक गुणवत्तापूर्ण उत्पाद और सेवाएँ पहुँचाने के लिए नवीन व्यावसायिक मॉडल विकसित करता है।

आज कृषि का दायरा केवल फसल उत्पादन तक सीमित नहीं है। फल एवं सब्जी उत्पादन, जैविक खेती, प्राकृतिक खेती, डेयरी, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती, फूलों की खेती, कृषि पर्यटन, कृषि मशीनरी, कृषि ड्रोन, डिजिटल कृषि सेवाएँ, स्मार्ट सिंचाई प्रणाली, कृषि परामर्श, खाद्य प्रसंस्करण तथा ई-कॉमर्स आधारित विपणन

जैसे अनेक क्षेत्र एग्रीप्रेन्योरशिप के अंतर्गत आते हैं। इन क्षेत्रों में आधुनिक विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग ने कृषि व्यवसाय को पहले की तुलना में अधिक लाभकारी और आकर्षक बना दिया है। यही कारण है कि आज शिक्षित युवा भी कृषि आधारित स्टार्टअप स्थापित करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

## भारतीय युवाओं के लिए बढ़ती संभावनाएँ

वर्तमान समय में भारत में कृषि आधारित उद्यमिता के लिए अनुकूल वातावरण विकसित हो रहा है। देश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का तेजी से विस्तार हो रहा है, जैविक उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है, उपभोक्ता गुणवत्तापूर्ण एवं सुरक्षित खाद्य पदार्थों को प्राथमिकता दे रहे हैं तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से उत्पादों को सीधे उपभोक्ताओं तक पहुँचाना पहले की अपेक्षा अधिक सरल हो गया है। इन परिस्थितियों ने कृषि व्यवसाय के अनेक नए द्वार खोले हैं।

आज का युवा केवल पारंपरिक खेती तक सीमित रहने के बजाय उच्च मूल्य वाली फसलों, संरक्षित खेती, हाइड्रोपोनिक्स, एरोपोनिक्स, वर्टिकल फार्मिंग, सटीक कृषि (Precision Agriculture), कृषि ड्रोन सेवाओं, कृषि डेटा विश्लेषण, फार्म मैनेजमेंट, ऑनलाइन कृषि विपणन तथा कृषि परामर्श जैसे क्षेत्रों में भी अपने करियर का निर्माण कर सकता है। डिजिटल तकनीकों के उपयोग ने छोटे से छोटे उद्यमी को भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया है। सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म तथा डिजिटल भुगतान प्रणाली ने कृषि उत्पादों की बिक्री को सरल, पारदर्शी और लाभदायक बनाया है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले युवाओं के लिए भी नए व्यवसायिक अवसर उत्पन्न हुए हैं।

## एग्रीप्रेन्योरशिप और ग्रामीण विकास

एग्रीप्रेन्योरशिप केवल व्यक्तिगत आय अर्जित करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण विकास का एक प्रभावी उपकरण भी है। जब कोई युवा कृषि आधारित उद्यम स्थापित करता है, तो वह केवल स्वयं के लिए रोजगार नहीं बनाता, बल्कि अनेक अन्य लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आय के नए स्रोत विकसित होते हैं, स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति मिलती है।

कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना से किसानों को अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त होता है। यदि कृषि उत्पादों का स्थानीय स्तर पर प्रसंस्करण किया जाए, तो उनकी गुणवत्ता, उपयोगिता और बाजार मूल्य में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। इससे किसानों की आय बढ़ती है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिक गतिविधियों का विकास होता है। एग्रीप्रेन्योरशिप किसानों और उपभोक्ताओं के बीच की दूरी को भी कम करती है तथा आपूर्ति श्रृंखला को अधिक प्रभावी बनाती है। किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ), सहकारी संस्थाओं तथा कृषि स्टार्टअप के माध्यम से छोटे और सीमांत किसानों को बाजार, तकनीक और वित्तीय सेवाओं तक बेहतर पहुँच प्राप्त हो रही है।

## सरकारी पहल और संस्थागत सहयोग

भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारों ने कृषि उद्यमिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अनेक योजनाएँ प्रारंभ की हैं। स्टार्टअप इंडिया, आत्मनिर्भर भारत अभियान, कृषि अवसंरचना कोष, प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, एग्री-क्लिनिक एवं एग्री-बिजनेस सेंटर कार्यक्रम तथा किसान उत्पादक संगठन संवर्धन कार्यक्रम जैसी अनेक पहलें युवाओं को कृषि आधारित उद्यम स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। इन योजनाओं के माध्यम से प्रशिक्षण, ऋण, अनुदान, तकनीकी मार्गदर्शन तथा विपणन सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

देश के कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केंद्र, इनक्यूबेशन सेंटर तथा प्रबंधन संस्थान भी युवाओं में उद्यमशीलता की भावना विकसित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। इन संस्थानों द्वारा व्यवसाय योजना तैयार करने, वित्तीय प्रबंधन, विपणन रणनीति, ब्रांडिंग, गुणवत्ता

नियंत्रण तथा डिजिटल तकनीकों के उपयोग संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किए जाते हैं। इससे युवा केवल तकनीकी रूप से ही नहीं, बल्कि व्यवसायिक दृष्टि से भी सक्षम बनते हैं।

## एग्री-स्टार्टअप और नवाचार की भूमिका

पिछले कुछ वर्षों में भारत में एग्री-स्टार्टअप की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आज अनेक युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), ड्रोन, सेंसर तकनीक, रिमोट सेंसिंग, मशीन लर्निंग तथा बिग डेटा का उपयोग करके कृषि क्षेत्र की समस्याओं के समाधान विकसित कर रहे हैं। मौसम की सटीक जानकारी, रोग एवं कीटों की पहचान, स्मार्ट सिंचाई प्रणाली, डिजिटल मंडी, ऑनलाइन कृषि परामर्श तथा कृषि आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन जैसी सेवाएँ किसानों की उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

नवाचार आधारित कृषि उद्यम केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे जल संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में भी योगदान दे रहे हैं। आधुनिक तकनीकों के माध्यम से कृषि को अधिक टिकाऊ, लाभदायक और पर्यावरण अनुकूल बनाया जा सकता है।

## चुनौतियाँ और समाधान

यद्यपि एग्रीप्रेन्योरशिप में अपार संभावनाएँ हैं, फिर भी अनेक चुनौतियाँ इसके विकास में बाधक हैं। प्रारंभिक पूंजी की कमी, गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण का अभाव, बाजार तक सीमित पहुँच, मूल्य अस्थिरता, जलवायु परिवर्तन, जोखिम प्रबंधन की कमी तथा व्यवसायिक अनुभव का अभाव कई युवाओं के सामने प्रमुख समस्याएँ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं की कमी तथा आधुनिक तकनीकों के सीमित उपयोग के कारण भी कई उद्यम अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर पाते।

इन चुनौतियों का समाधान सरकार, शैक्षणिक संस्थानों, वित्तीय संस्थाओं तथा निजी क्षेत्र के समन्वित प्रयासों से किया जा सकता है। युवाओं को उद्यमिता संबंधी प्रशिक्षण, आसान ऋण, डिजिटल विपणन, व्यवसाय परामर्श, आधुनिक तकनीकों की उपलब्धता तथा बाजार से जोड़ने की प्रभावी व्यवस्था विकसित करना आवश्यक है। साथ ही विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में उद्यमिता आधारित शिक्षा को बढ़ावा देकर युवाओं में नवाचार और आत्मनिर्भरता की भावना विकसित की जानी चाहिए।

## निष्कर्ष

इक्कीसवीं सदी का भारत नवाचार, तकनीक और उद्यमिता के युग में प्रवेश कर चुका है। ऐसे समय में कृषि क्षेत्र भी तीव्र गति से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। अब कृषि केवल परिश्रम का कार्य नहीं, बल्कि ज्ञान, विज्ञान, प्रबंधन और नवाचार का समन्वित व्यवसाय बन चुकी है। एग्रीप्रेन्योरशिप भारतीय युवाओं को अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता और नेतृत्व क्षमता का उपयोग करते हुए आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान करती है। यह न केवल व्यक्तिगत आर्थिक विकास का माध्यम है, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने, ग्रामीण रोजगार सृजन, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, कृषि के आधुनिकीकरण तथा समावेशी आर्थिक विकास का भी सशक्त साधन है।

यदि भारत की युवा शक्ति आधुनिक तकनीकों, वैज्ञानिक सोच, व्यावसायिक दृष्टिकोण तथा नवाचार को अपनाकर कृषि क्षेत्र में आगे बढ़ती है, तो आने वाले वर्षों में भारत वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था में और अधिक मजबूत स्थान प्राप्त कर सकता है। एग्रीप्रेन्योरशिप केवल एक उभरता हुआ करियर विकल्प नहीं, बल्कि विकसित भारत, आत्मनिर्भर भारत और समृद्ध ग्रामीण भारत के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण आधारशिला है। आज आवश्यकता इस बात की है कि अधिक से अधिक युवा कृषि को केवल परंपरागत पेशा न मानकर एक आधुनिक, लाभकारी और सम्मानजनक उद्यम के रूप में अपनाएँ। यही सोच भारत के कृषि क्षेत्र को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के साथ-साथ देश के समग्र आर्थिक और सामाजिक विकास को भी नई दिशा प्रदान करेगी।